

इतिहास समाचार

रंगश्री / Creative History (इतिहास ट्रस्ट) की गतिविधियों का मुखपत्र

इतिहास समाचार भारतीय ज्ञान की परंपरा, सामाजिक विकास, लोक स्मृति और ग्रामीण इतिहास के आकलन एवं संकलन-संयोजन के लिए कार्यरत रंगश्री/Creative History (इतिहास ट्रस्ट) की गतिविधियों का मुखपत्र है। यह लोक, ग्रामीण समाज, संस्कृति और उपेक्षित इतिहास के उस पक्ष के दस्तावेजीकरण के लिए प्रतिबद्ध है, जिसे अमहत्वपूर्ण मानकर छोड़ दिया जाता है।

सलाहकार समिति

डॉ. देवेन्द्र चौबे, महेंद्र प्रसाद सिंह, डॉ. हितेंद्र पटेल, कुमार नयन, सुरेश कांटक

संपादक-मण्डल

डॉ. रश्मि चौधरी, डॉ. दीपक कुमार राय, डॉ. गणपत तेली, डॉ. उज्ज्वल आलोक, प्रदीप कुमार, प्रियंका कुमारी

विशेष परामर्श

नागेंद्र नाथ ओझा, डॉ. ब्रदीनारायण, डॉ. मणिन्द्र नाथ ठाकुर, डॉ. अखलाक अहमद आहन, दिव्य विजय सिंह, डॉ. कुमार कौस्तुब, शशांक शेखर (पत्रकार), लक्ष्मीकांत मुकुल, डॉ. नूरजहाँ मोमिन, अनिल कुमार गोयल, हरिश्चंद्र शर्मा, देश निर्मोही, डॉ. सूर्य कुमार सिंह, समदर्शी संजय, अनिल कुमार पाठक, अजय कुमार, रमाकांत उपाध्याय, डॉ. सीमा पटेल, शकील अंसारी, वृजभूषण चौबे, डॉ. देविना अक्षयबर, डॉ. मधुलिका बेन पटेल, विमल कुमार, सत्येंद्र कुमार चौबे, अखिलेश कुमार पाण्डेय

सह संपादक/ कॉपी एडिटर

कु. शशि, संजय कुमार, आरती, नीलम रानी

विशेष सहयोग

डॉ. संतोष भारद्वाज, डॉ. अजय यादव, डॉ. गौतम चौबे, डॉ. जितेंद्र यादव, डॉ. सरफराज अहमद, डॉ. खुशी पटनायक, राहुल शर्मा, श्याम जी चौबे

*संपादन/ संचालन/परामर्श/सहयोग पूर्णतः अवैतनिक और अव्यवसायिक

आगामी आयोजन

7वाँ सर्जनात्मक इतिहास सम्मेलन 2019

मेरा गाँव, मेरा इतिहास

My Village, My History

12वाँ कुँवर सिंह स्मृति व्याख्यान 2019

7वाँ बक्सर ग्रामीण लेखक इतिहासकार सम्मेलन

रामायण चौबे स्मृति लोक व्याख्यान 2019

सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं काव्य-पाठ

16 नवम्बर 2019, शनिवार; प्रातः 11 बजे से

स्थान: गढ़ (कुँवर सिंह), जगदीशपुर, आरा (बिहार)

14 नवम्बर 2019, वृहस्पतिवार; अपराह्न 3:30 बजे से
अहिरौली, बक्सर

मानव सभ्यता के विकास को जानने के लिए जरूरी है इतिहास

ताशकंद में 11वाँ कुँवर सिंह स्मृति व्याख्यान 2018 संपन्न



ताशकंद (उज्बेकिस्तान) : पिछले दिनों ताशकंद राज्य प्राच्य विद्या संस्थान, ताशकंद में इतिहास की समझ पर 24 अक्टूबर 2018 को आयोजित संगोष्ठी में 1857 के प्रसिद्ध सेनानी कुँवर सिंह के सम्मान में बाबुरी साहित्य पर केन्द्रित अपने व्याख्यान में प्रसिद्ध भारतविद प्रो. उल्फत मुहिबोवा ने कहा कि “मानव सभ्यता के इतिहास पर बात करना इतिहास का एक महत्वपूर्ण कार्य और दायित्व है। इतिहास मानव सभ्यता की विकास यात्रा को अपनी अनंत धाराओं में दर्ज करता है। उनका अध्ययन करना और उसे जनसमाज के ज्ञान का हिस्सा बनाना एक बड़ी जिम्मेदारी है।” उन्होंने यह भी कहा कि “बाबुरीकालीन साहित्य भारत और उज्बेकिस्तान में मध्यकाल में विकसित उस सभ्यता और साझी संस्कृति के विरासत की मिसाल पेश करता है, जिसे संभालकर रखना हमारा दायित्व है।” इसी कार्यक्रम में बोलते हुए इतिहासकार और रंगश्री की उपाध्यक्ष डॉ. रश्मि चौधरी ने कहा कि “लोक समाज में इतिहास के अनेकों ऐसे स्रोत हैं, जो भारतीय इतिहास के लोक पक्ष को समझने में मदद करते हैं। 1857 के संघर्ष और उसके नायकों में कुँवर सिंह आदि की जितनी गहरी छवि लोक में मौजूद है, वह आज भी एक नया इतिहास लिखने की प्रेरणा देता है।” बाद में रंगश्री ने 1857 के सेनानी कुँवर सिंह के सम्मान में प्रो. उल्फत मुहिबोवा द्वारा दिए गए व्याख्यान को 11वाँ कुँवर सिंह स्मृति व्याख्यान के रूप में स्वीकार कर लिया।



छठा बक्सर ग्रामीण लेखक-इतिहासकार सम्मेलन और रामायण चौबे स्मृति लोक व्याख्यान 2018 संपन्न



बक्सर : पिछले दिनों ज्योति प्रकाश स्मृति पुस्तकालय, बक्सर में ‘मेरा गाँव, मेरा इतिहास’ पर केन्द्रित कार्यक्रम में छठा रामायण चौबे स्मृति लोक व्याख्यान देते हुए इतिहासकार लक्ष्मीकांत मुकुल ने कहा कि “गाँव का इतिहास गाँव के निवासियों की जीवंतता, उनके हर्ष-संतोष, विरासत में मिले गुण-अवगुण, जीत-हार आदि ग्रामीण कहानियों, मुखाहरी किस्सों आदि में व्यक्त होते हैं, जिनके आधार पर वहाँ के ऐतिहासिक तत्वों को टटोला, परखा और समझा जाता है।” बक्सर ग्रामीण लेखक इतिहासकार सम्मेलन में कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए सामाजिक चिंतक हरिनंदन कुमार ने कहा कि निःस्वार्थ भाव से आज के समय में गाँव के इतिहास पर बात करना एक महत्वपूर्ण बात है। कार्यक्रम के प्रारंभ में कथाकार सुरेश कांटक ने बीज वक्तव्य दिया। डॉ. अरुण मोहन भारवि ने मुख्य वक्तव्य दिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजमणि मिश्र थे। पत्रकार शशांक शेखर, शिवबहादुर पाण्डेय प्रीतम, ज्ञानेश्वर नाथ मिश्र, कृष्णा नन्द चौबे, राम छबीला सिंह, धीरज, कल्याण सिंह, नन्द कुमार पाण्डेय, दीपेन्द्र कुमार, संजीव, शमशाद आलम, रामाधार सिंह, मीरा सिंह मीरा, कुमार अनुराग, वैदेही श्रीवास्तव आदि ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए कवि कुमार नयन ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन के साथ पत्रकार विमल कुमार ने किया।

क्रिएटिव हिस्ट्री प्रोफाइल : एक



■ नागेन्द्र नाथ ओझा; राजनीतिक चिंतक एवं पूर्व सांसद ■ रश्मि चौधरी; इतिहासकार एवं रंगश्री की उपाध्यक्ष
■ महेंद्र प्रसाद सिंह; रंगकर्मी, रंगश्री के संस्थापक एवं सचिव ■ कुमार नयन; कवि एवं सामाजिक चिंतक ■ दीपक कुमार राय; इतिहासकार एवं प्रतिश्रुति के संस्थापक



■ देवेन्द्र चौबे; लेखक, इतिहासकार एवं शिक्षाविद ■ हितेंद्र पटेल; इतिहासकार और कथाकार ■ बद्रीनारायण; कवि, विचारक एवं प्रसिद्ध इतिहासकार ■ मणिन्द्र नाथ ठाकुर; राजनीतिक समाजशास्त्री एवं शिक्षाविद
■ अख़लाक अहमद आहन; लेखक एवं शिक्षाविद



■ सुरेश कांटक; कथाकार एवं सामाजिक विचारक ■ गणपत तेली; आलोचक, संपादक एवं अनुवादक
■ उज्ज्वल आलोक; अध्येता एवं शिक्षा तकनीक के विशेषज्ञ ■ प्रदीप कुमार; कवि, संपादक एवं युवा अध्येता ■ प्रियंका कुमारी; अध्येता एवं संपादक



■ लक्ष्मीकांत मुकुल; कवि एवं इतिहासकार ■ शशांक शेखर; पत्रकार एवं कई सामाजिक संस्थाओं से संबध
■ दिव्य विजय सिंह; 1857 के प्रसिद्ध सेनानी कुँवर सिंह की वर्तमान पीढ़ी के सदस्य ■ विमल कुमार; पत्रकार एवं जनमित्र चैनल के संपादक ■ अखिलेश पाण्डेय; रंगकर्मी एवं रंगश्री से संबध



■ सीमा पटेल; इतिहासकार ■ रमाकांत उपाध्याय; विज्ञान एवं सामाजिक कार्यों में सक्रिय भागीदारी ■ अनिल कुमार पाठक; विधि-विशेषज्ञ, सामाजिक कार्यों में दिलचस्पी ■ संजय समदर्शी; विधि-विशेषज्ञ, सामाजिक कार्यों में दिलचस्पी ■ वृजभूषण चौबे; इतिहास में दिलचस्पी

शेष अगले अंक में ...

इतिहास के सौ वर्ष :

इतिहास ट्रस्ट का चार दिवसीय आयोजन
10वाँ कुँवर सिंह स्मृति व्याख्यान, 5वाँ बक्सर ग्रामीण लेखक-इतिहासकार सम्मेलन एवं रामायण चौबे स्मृति लोक व्याख्यान 2017 संपन्न

प्रवेशांक 'इतिहास समाचार 2017' का लोकार्पण



बक्सर : “भारतीय समाज और राजनीति का इतिहास मानव सभ्यता के संघर्ष के इतिहास के अनेक मोड़ों से गुजरते हुए यहाँ तक पहुँचा है। आज चंपारण आन्दोलन और सोवियत क्रांति के बहाने इतिहास के सौ साल को याद करना आधुनिक समाज के इतिहास और लोक समाज को भी समझना है।” ये बातें प्रसिद्ध राजनीतिक विचारक और राज्यसभा के पूर्व सांसद नागेन्द्र नाथ ओझा ने रंगश्री/Creative History (इतिहास ट्रस्ट) द्वारा बक्सर के चरित्रवन में आयोजित इतिहास के सौ वर्ष (Hundred Years of History) पर आयोजित चार दिवसीय कार्यक्रम में कही। इतिहासकार ब्रज कुमार पाण्डेय ने कहा कि “पिछले सौ वर्षों में आर्थिक इतिहास का स्वरूप बदला है।” इस अवसर पर प्रो. अरुण कुमार और जवाहरलाल श्रीवास्तव ने क्रमशः दसवाँ कुँवर सिंह स्मृति एवं पाँचवाँ रामायण चौबे स्मृति लोक व्याख्यान दिया और ओमप्रकाश राय ने अध्यक्षता की। अहिरोली, चौसा, कथकौली और बक्सर में आयोजित बक्सर ग्रामीण लेखक-इतिहासकार सम्मेलन में दीपक राय, शशांक शेखर, शिव बहादुर पाण्डेय प्रीतम, लक्ष्मीकांत मुकुल, सुरेश कांटक, वैदेही श्रीवास्तव, विमल कुमार सहित बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया और अपने विचार रखे। इस अवसर पर इतिहास समाचार 2017 के प्रवेशांक का लोकार्पण अतिथियों ने किया।



Creative History (इतिहास ट्रस्ट) की समितियाँ

रंगश्री/Creative History (इतिहास ट्रस्ट) ने इतिहास संबंधी कार्यों के लिए कार्यकारिणी और सलाहकार समिति का गठन किया है। डॉ. रश्मि चौधरी, रमाकांत उपाध्याय, गणपत तेली, प्रदीप कुमार और अखिलेश पाण्डेय को कार्यकारिणी समिति और डॉ. देवेन्द्र चौबे, महेंद्र प्रसाद सिंह, हितेंद्र पटेल, कुमार नयन और सुरेश कांटक को सलाहकार समिति में नामित किया गया है।

पारंपरिक ज्ञान : शहीदी मेला

चंडीगढ़-सरहिंद सड़क पर स्थित फतेहगढ़ साहिब में प्रत्येक वर्ष शहीदी जोड़-मेला का आयोजन होता है। यहाँ सिकखों के दसवें गुरु श्री गुरु गोविन्द सिंह के दो छोटे पुत्रों जोरावर सिंह और फतेह सिंह को मुगलों ने दीवार में 26 दिसम्बर 1705 को जीवित चिनवा दिया था। सरहिंद के गवर्नर ने उनके सामने प्रस्ताव रखा था कि अगर वे इस्लाम धर्म कबूल कर लें तो उन्हें मुक्त कर दिया जाएगा, लेकिन वीरपुत्रों ने मृत्यु का वरण किया। तब इनकी उम्र सिर्फ क्रमशः नौ वर्ष और सात वर्ष थी। इस घटना के बाद यहाँ एक गुरुद्वारा बना, जिसका फतेह सिंह के नाम पर नामकरण किया गया। उसी कुर्बानी की स्मृति में सर्वप्रथम 1888 में फतेहगढ़ साहिब में शहीदी जोड़-मेला आयोजित किया गया। अब यह 26 से 28 दिसम्बर को प्रत्येक वर्ष बड़ी श्रद्धापूर्वक मनाया जाता है। इस मेले को देखने और उसमें भाग लेने के लिए लाखों श्रद्धालु देश के हर कोने से आते हैं, जिसमें आस-पास के ग्रामीण श्रद्धालुओं के लिए लंगर लगते हैं। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी दीवान की व्यवस्था करती है, जहाँ सिकख प्रचारक रागी, ढादी जत्थे भक्ति गीत और सिकख इतिहास का लेखा-जोखा प्रस्तुत करते हैं।

‘सुराज’ की भोजपुरी में तीसरी नाट्य प्रस्तुति

पिछले वर्ष रंगश्री ने 1857 के सेनानी कुँवर सिंह पर देवेन्द्र चौबे लिखित नाटक ‘सुराज’ की भोजपुरी में तीसरी नाट्य प्रस्तुति दिल्ली के मालवकर हॉल में की। इसमें राज्यसभा के सांसद श्री आर. के. सिन्हा मुख्य अतिथि थे। नाट्य रूपांतरण और निर्देशन प्रसिद्ध रंगकर्मी महेंद्र प्रसाद सिंह ने किया। कुँवर सिंह एवं अमर सिंह की भूमिका क्रमशः सौमित्र वर्मा और अखिलेश पाण्डेय ने निभाई।



‘इतिहास समाचार’ और ‘मिलना अपने से’ का लोकार्पण

पिछले दिनों क्रिएटिव हिस्ट्री की समाचार पत्रिका ‘इतिहास समाचार’ के प्रवेशांक 2017 का लोकार्पण पूर्व सांसद और राजनीतिक विचारक नागेन्द्र नाथ ओझा, इतिहासकार ब्रज कुमार पाण्डेय, अरुण कुमार, देवेन्द्र चौबे, दीपक राय, कुमार नयन, लक्ष्मीकांत मुकुल, शशांक शेखर, कृष्णा नन्द चौबे, यतीन्द्र चौबे, फौदार माझी, परवेज आलम, मधुसूदन चौबे आदि द्वारा इतिहास के सौ वर्ष पर केन्द्रित कार्यक्रम में बक्सर, अहिरोली, चौसा और कथकौली में हुआ। इसी प्रकार ट्रस्ट की पहली किताब ‘मिलना अपने से’ (कवि सतगुरु शरण; संपादक प्रियंका कुमारी और प्रदीप कुमार) का लोकार्पण प्रसिद्ध लेखक गंगाप्रसाद विमल, कवि और आजकल के संपादक राकेश रेणु, जे.एन.यू. के प्रो. ओमप्रकाश सिंह, लेखक देवेन्द्र चौबे, प्रो. डी. के. लोबियाल एवं प्रो. अदिति शरण द्वारा किया गया।

नर्सरी स्कूल के बच्चों ने किया बाल रामायण

पिछले दिनों जे.एन.यू. नर्सरी स्कूल की सचिव डॉ. रश्मि चौधरी के निर्देशन में जे.एन.यू. नर्सरी स्कूल के बच्चों ने बाल रामायण की नाट्य प्रस्तुति की। वीमेंस क्लब की अध्यक्ष श्रीमती लक्ष्मी कुमार ने बच्चों का उत्साह बढ़ाया। स्कूल की शिक्षिका श्रीमती कल्याणी रामानाथन और भारती रावत ने मंचन में सहयोग किया।



महात्मा गाँधी के 150 वर्ष

आधुनिक इतिहास और भारतीय चिंतनधारा को प्रभावित करनेवाले विचारकों और राजनेताओं में महात्मा गाँधी (1869-1948) का स्थान शीर्ष पर है। वे सिर्फ मध्यवर्गीय एवं साधन-सम्पन्न जनता का ही स्वाधीनता आन्दोलन में नेतृत्व नहीं करते हैं, अपितु कृषक-ग्रामीण जनता का भी नेतृत्व करते हुए भारतीय राष्ट्रियता की पहचान, सत्य, अहिंसा, स्वदेशी, स्वावलंबन आदि गतिशील प्रतीकों के सहारे अपने सपनों के भारत में पृथ्वी पर एक ऐसे स्वर्ग की परिकल्पना करते हैं, जो न किसी का गुलाम होगा और न ही किसी पर निर्भर करेगा। उसमें लोग सभ्यता, संस्कृति और स्वाधीनता बोध में एक अच्छे नागरिक का उत्तम उदाहरण होंगे।

हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन पर कार्यशाला आयोजित

पिछले दिनों जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में साहित्येतिहास लेखन पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें प्रदीप कुमार, कु. शशि, श्वेता शांडिल्य, पार्वती कुमारी, माली सरिता रामसूरत, छाया चौबे, संजय कुमार, उज्ज्वल आलोक, अशोक कुमार यादव, संदीप सौरभ, आमिर हमजा, परविंदर अम्बर, निधि श्री, मनीष

कनौजिया, सुशील कुमार, दीपक कश्यप, समीक्षा दुबे आदि ने भाग लिया और साहित्य के इतिहास लेखन पर अपने विचार रखे एवं रचना पाठ किया। कार्यक्रम में मणिन्द्र नाथ ठाकुर, रजनीश कुमार मिश्र, देवेन्द्र चौबे, श्रीनिवास त्यागी, संतोष भारद्वाज, आशुतोष पाण्डेय, गणपत तेली, अजय कुमार यादव आदि ने विशिष्ट वक्ता के रूप में भाग लेते हुए कहा कि “इतिहास की बहुत-सी सामग्री मौखिक परम्परा में है, जिसे लिखा ही नहीं गया है। उन्हें भी इतिहास लेखन का हिस्सा बनाना जरूरी है।”

ग्रामीण इतिहास : वाल्टर हाउजेर

संयुक्त राज्य अमेरिका के वाल्टर हाउजेर (1927-2019) दुनिया के उन पहले इतिहासकारों में हैं जिन्होंने किसी भी देश के इतिहास में किसानों के महत्त्व और उनकी भूमिकाओं को बारीकी से समझने का प्रयास किया। आरंभ में इनकी रुचि यूरोपीय इतिहास में थी; परंतु मिल्टन सिंगर, रॉबर्ट रेडफील्ड और बर्नी कोह आदि के प्रभाव से इनकी रुचि दक्षिण एशियाई इतिहास में और खासकर उत्तर भारत और उसमें भी बिहार में स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान हुए भारतीय किसान आंदोलनों में अधिक हो गई। 1957 ई. से ही अपने शोध कार्य के सिलसिले में ये भारत आते रहे थे। वाल्टर हाउजेर समाज के गरीब शोषित और पीड़ित लोगों के प्रति हमेशा से ही राजनीतिक रूप से प्रतिबद्ध रहे। उनकी इच्छा थी कि यह शोषित और पीड़ित लोग अपने भाग्य के निर्णायक राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लें और सामाजिक सुधार और परिवर्तन के अग्रदूत बनें। इनकी ‘दि बिहार प्रोविंशियल किसान सभा, 1929-1942 : ए स्टडी ऑफ इंडियन पीजेंट मूवमेंट’; ‘सहजानंद ऑन एग्रीकल्चर लेबर एंड रूलर पुअर’; ‘स्वामी सहजानंद एंड द पीजेंट्स ऑफ झारखंड, ए व्यू फ्राम 1941’; ‘कल्चर, वर्नाकुलर पॉलिटिक्स एंड द पीजेंट्स : इंडिया (1889-1950)’ आदि महत्त्वपूर्ण पुस्तकें और लेख प्रकाशित हैं।



जे.एन.यू. के पचास वर्ष

संसद के एक विशेष अधिनियम के तहत 1969 ई. में स्थापित देश के एक प्रसिद्ध विश्वविद्यालय जे.एन.यू. के इस वर्ष नवंबर में पचास वर्ष पूरे हो जाएंगे। जे.एन.यू. देश के उन गिने चुने संस्थानों में से एक रहा है जिसने अपनी स्थापना के कुछ ही वर्षों में ज्ञान के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर पहचान बना ली थी। खासकर, इतिहास, साहित्य, अर्थशास्त्र, भूगोल, कंप्यूटर विज्ञान, जीव विज्ञान, समाजशास्त्र एवं अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन में इस विश्वविद्यालय ने विशेष ख्याति प्राप्त की है। हाल ही में इस विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम.ए. की पढ़ाई करने वाले प्रोफेसर अभिजीत बनर्जी को गरीबी पर काम करने के लिए वर्ष 2019 का अर्थशास्त्र का प्रसिद्ध नोबेल पुरस्कार देने की घोषणा हुई है।



राजेश जोशी और नरेश सक्सेना नागार्जुन सम्मान से सम्मानित

जनकवि नागार्जुन स्मारक निधि द्वारा वर्ष 2019 एवं 2018 में क्रमशः कवि राजेश जोशी और नरेश सक्सेना को साहित्य के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए नागार्जुन सम्मान से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता स्मारक निधि के अध्यक्ष प्रो. भैनेजर पाण्डेय ने और संचालन संस्था के सचिव प्रो. देवशंकर नवीन ने किया। इस अवसर पर प्रो. नित्यानंद तिवारी ने मुख्य वक्तव्य दिया। कार्यक्रम में मदन कश्यप, उपेन्द्र कुमार, श्रीधरम, चंद्रा सदायत आदि सहित बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया।

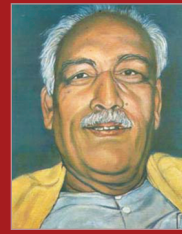


उपलब्धियाँ

पिछले दिनों लेखक देवेन्द्र चौबे और अखलाक अहमद आहन को ताशकंद स्टेट इंस्टिट्यूट ऑफ ओरिएण्टल स्टडीज, ताशकंद (उज्बेकिस्तान) में विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में आमंत्रित किया गया। इतिहासकार हितेन्द्र पटेल भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला में फेलो बने। आई.सी.एस.आर, भारत सरकार एवं भोजपुरी स्पीकिंग यूनियन, कला व संस्कृति मंत्रालय और मॉरिशस गणराज्य के संयुक्त तत्वावधान में तथा रंगकर्मी महेंद्र प्रसाद सिंह के निर्देशन में आयोजित इक्कीस दिवसीय नाट्य कार्यशाला के समापन पर भोजपुरी नाटक ‘चम्पारण सत्याग्रह’ का इंदिरा गांधी सेंटर, मॉरिशस में सफल मंचन हुआ। मधुलिका बेन पटेल, संदीप सौरभ, उज्ज्वल आलोक, मनीष कुमार कनौजिया, कुमारी सीमा, देविना अक्षयवर, स्तुति राय और प्रियंका कुमारी की देश के अलग-अलग विश्वविद्यालयों-कॉलेजों में सहायक प्रोफेसर के रूप में नियुक्ति हुई। सभी को बधाई और शुभकामनाएँ।

इतिहास के नायक : उय्यलवडा नरसिम्हा रेड्डी

उय्यलवडा नरसिम्हा रेड्डी (1805-1847) का जन्म एक तेलगु पोलिघर परिवार में हुआ था। वे 1846 में अंग्रेजों के खिलाफ किसानों के विद्रोह के जनक थे। यह विद्रोह रायलसीमा (आंध्र प्रदेश) के कुरनूल जिले में हुआ था। अंग्रेजों द्वारा लागू की गई नयी लगान व्यवस्था से उपजे कृषक असंतोष को इन्होंने संगठित प्रतिरोध का रूप दिया था। इनके प्रयासों को जल्द ही किसानों का व्यापक समर्थन मिला और इन्होंने 5000 लोगों की सेना बनाकर अंग्रेजों से युद्ध किया लेकिन पराजित हो गए। युद्ध हारने के बाद अंग्रेजों ने इन्हें पकड़ लिया और मुकदमा चलाने के बाद 1847 में फांसी की सजा दे दी। कुरनूल में आज भी इस स्वतंत्रता सेनानी को आम जनता सम्मान के साथ याद करती है। इनके जीवन पर तेलगु और हिंदी में सायरा नरसिम्हा रेड्डी नामक एक फिल्म भी बन चुकी है।



प्रसंग: हजारीप्रसाद द्विवेदी गंगा-घाटी सभ्यता, बक्सर और सीताराम उपाध्याय

-देवेन्द्र चौबे

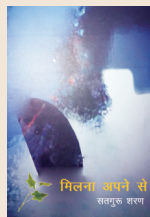
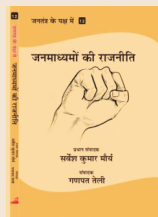
इतिहास : 1919 जलियाँवाला बाग हत्याकांड के सौ वर्ष

भारत के इतिहास में 1919 ई. का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। आज से सौ वर्ष पूर्व 13 अप्रैल 1919 को वैशाखी के दिन अमृतसर के जलियाँवाला बाग में एक सार्वजनिक जनसभा का आयोजन किया गया था। 10 अप्रैल 1919 को सत्याग्रहियों पर गोली चलाने और डॉ. सत्यपाल एवं सैफुद्दीन किचलू की गिरफ्तारी के विरोध में हो रही इस निहत्थी जनसभा पर जनरल डायर ने अंधाधुंध गोलियाँ चलवायी, जिसमें लगभग एक हजार लोग मारे गए या घायल हुए। इस नरसंहार से पूरा देश स्तब्ध रह गया। इस हत्याकांड के सौ वर्ष पूरा होने पर भारत पहुंचे इंग्लैंड के कैंटरबरी के आर्चबिशप वेल्बी ने जलियाँवाला बाग में जमीन पर लेटकर शहीदों को नमन करते हुए कहा कि "आपको याद है कि उन्होंने क्या किया था, यह स्मृति जीवित रहेगी। यहाँ होने वाले अपराध के लिए मुझे खेद है। एक धार्मिक नेता के रूप में मैं इस दुखद घटना पर शोक प्रकट करता हूँ।"



किताबें

जन माध्यमों की राजनीति, संपादक : डॉ. गणपत तेली, स्वराज प्रकाशन, 2018; मिलना अपने से, कवि: सतगुरु शरण, संपादक : प्रियंका कुमारी और प्रदीप कुमार, रंगश्री प्रकाशन, 2019



आगामी प्रकाशन : ग्रामीण इतिहास

संपादक : देवेन्द्र चौबे ■ दीपक कुमार राय ■ रश्मि चौधरी

भाग: एक - अवधारणा एवं संदर्भ : देवेन्द्र चौबे, दीपक कुमार राय; भाग : दो - ग्रामीण इतिहास का स्थानीय संदर्भ : सीमा पटेल, सुरेश कांटक, लक्ष्मीकांत मुकुल, कुमार नयन, पंकज भारद्वाज, परवेज आलम, शकील अहमद, फौदार मांझी, यतीन्द्र चौबे, कृष्णा नन्द चौबे; भाग : तीन - ग्रामीण इतिहास : वैचारिक संदर्भ : सरफराज अहमद, नूतनश्री, वीणा सुमन; भाग : चार - ग्रामीण इतिहास का राष्ट्रीय संदर्भ : हरिराम मीणा, जूरी बोराह बोरगोहेन, पी रवि, एस. आर. हरनोट, कश्यप दीपक, राव तुला राम; भाग : पाँच - ग्रामीण इतिहास का वैश्विक संदर्भ: हिरोको नाका (जापान), वांग ली (चीन), देविना अक्षयवर (मॉरिशस) परिशिष्ट : संदर्भ ग्रन्थ सूची, लेखक परिचय, नामानुक्रमणिका

ग्रामीण इतिहास कार्यशाला

ग्रामीण इतिहास कार्यशाला का आयोजन प्रतिवर्ष किसी-न-किसी गाँव में किया जाता है। गाँवों में होनेवाली इस कार्यशाला के संपर्क सूत्र हैं : डॉ. देवेन्द्र चौबे, कुमार नयन, डॉ. दीपक कुमार राय, परवेज आलम, डॉ. रश्मि चौधरी, डॉ. गणपत तेली, कृष्णा नन्द चौबे, फौदार मांझी, प्रियंका कुमारी और प्रदीप कुमार।



फोन : 8383842812, 9430271602, 6201541931, 9311443956, 9013922827 एवं 7982389213

ई-मेल : creativehistorygroup@gmail.com

रंगश्री / Creative History (इतिहास ट्रस्ट), नई दिल्ली के लिए रश्मि चौधरी और अखिलेश कुमार पाण्डेय द्वारा प्रकाशित और स्वाति कम्युनिकेशन द्वारा मुद्रित। मोबाइल : 09213132174



(इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नयी दिल्ली द्वारा 26 अगस्त 2019 को आयोजित 31वें हजारीप्रसाद द्विवेदी स्मारक व्याख्यान में प्रो. देवेन्द्र चौबे द्वारा दिए गए व्याख्यान के कुछ अंश। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. सच्चिदानंद जोशी ने किया और स्वागत वक्तव्य कलानिधि, नई दिल्ली के प्रभारी डॉ. रमेश चन्द्र गौड़ ने दिया।)

इतिहास समाचार में सर्जनात्मक इतिहास से संबंधित गतिविधियों, उपलब्धियों और समाचारों आदि को प्रकाशनार्थ निम्नलिखित पते अथवा ई-मेल पर भेजा जा सकता है:

रंगश्री / Creative History (इतिहास ट्रस्ट)

रंगश्री हाऊस, 72, पॉकेट-4, सेक्टर-12, द्वारका, नई दिल्ली-110078

34/1, फ्लैट-E-1, डेसू रोड, महारौली, नई दिल्ली-110030

E-mail: creativehistorygroup@gmail.com
query@rangashree.in